माजुली के हिंदी प्रचारक

माधूर्ज्य कमल हजारिका

माजुली भारत के पूर्वोत्तर में स्थित असम प्रदेश में एक नदी द्वीप है। ब्रहमपुत्र के हृदय में वर्तमान में यह द्वीप विश्व में सर्ववृहत नदी द्वीप के रूप में जाना जाता है। सर्वानन्द सोनोवाल सरकार द्वारा सन् 2016ई. में जिला घोषित इस माजुली को भारत का इकलौता नदी द्वीप जिला होने का गौरव प्राप्त है। 880 वर्ग कि.मी. में फैला यह द्वीप विविध संस्कृतियों का एकता स्थल है। मध्यकाल में महापुरुष श्री मंत शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव ने इसी माजुली द्वीप को वैष्णव धर्म प्रचार का प्रमुख केंद्र बनाया। यहाँ कई सत्रों का स्थापन कर पूरे प्रदेश की लोगों को वैष्णववाद की शिक्षा दी। सत्रिया नृत्य, गीत, शिल्प कला आदि शंकरी संस्कृति का ध्वजावाहक माजुली असम की सांस्कृतिक राजधानी है। दोनों गुरुओं का मिलन भूमि मणिकांचन क्षेत्र माजुली कई जाति- जनजातियों का निवास स्थल है। प्रकृति की गोद में यह नदी द्वीप शस्यश्यामला है। मिसिंग, देउरी, कछारी, कैवर्त, केओत, नाथ, मटक, ब्राहमण, कलिता, सुतिया, आहोम, कोच आदि विविध सम्प्रदायों के लोगों का एक जगह मिलकर निवास करना संपूर्ण प्रदेश में अद्वितीय है, और इसी कारण यह समन्वय भूमि है। चारों और नद ब्रहमपुत्र से घिरा हुआ यह नदी द्वीप आध्यात्मिक, सांस्कृतिक परिवेश का एक वाहक है। यहाँ की हवा में संगीत है, कीर्तन की ध्वनि परिवेश को नवनीत रूप प्रदान करती है। मिसिंग घरों से आती ऐनितम की ध्वनि, देउरी गावों से आती बीसों की ध्वनि माजुली द्वीप का एक सुन्दर वर्णन प्रस्तुत करता है।

शिक्षा के क्षेत्र में देखें तो माजुली ऐतिहासिक काल से ही शिक्षा का एक प्रमुख केंद्र रहा है। पौराणिक समय में विविध जनजातियों ने इसे तंत्र-मंत्र की शिक्षा का केंद्र भी बनाया था। मठ मंदिर, सत्र एवं जनजातीय घरों से प्राप्त साँचीपात पोथी जैसे तंत्र सारांश, तांत्रिक विधि, तंत्र-मंत्र आदि इसका प्रमाण हैं। मध्यकाल में पूरे असम प्रदेश में जिस भक्ति आन्दोलन का चरम प्रभाव देखने को मिलता है, उसका केंद्र भी यही माजुली रहा। शंकरदेव और माधवदेव के संयुक्त प्रयास से माजुली के सत्रों को धर्मीय शिक्षा का एक मुख्य केंद्र बनाया गया और उन्नीसवीं सदी के अंत तक यही सत्र शिक्षा का केंद्र बना रहा। वर्तमान समय में भी विविध जाति-जनजाति अपनी परंपरागत शिक्षा चला ही रहे हैं और साथ में सत्रानुस्थान भी बना हुआ है मुक्त सांस्कृतिक विश्वविद्यालय। उन्नीसवीं सदी के मध्य भाग में ईसाईयों द्वारा धर्म प्रचार के लिए प्रकाशित पत्रिका 'अरुणोदय' के विरोध में यहीं माजुली से असम का प्रथम साप्ताहिक अखबार 'असम विलासिनी' सनातन धर्म एवं असमिया संस्कृति के प्रचार हेतु निकला। यहाँ के लगभग 79 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं।

भारत विविधता में एकता का देश है। पूरे देश में लगभग तीन हजार भाषाएँ एवं बोलियाँ प्रचलित हैं। स्वाधीन भारत में हिंदी ज्यादा राज्यों में बोली जाने वाली भाषा होने के कारण संविधान निर्माताओं ने इसे

राजभाषा का दर्जा दिया पर अहिंदी भाषी क्षेत्रों में जैसे पूर्वोत्तर भारत में वास करते विविध लोगों के लिए हिंदी को अपनाना थोड़ा कठिन रहा।

इन्हें हिंदी सीखने के लिए उच्चारण एवं वर्तनी की भाषा में वैज्ञानिक तरीकों को अपनाना कठिन अनुभव होता है।

ध्वनियाँ निकलना यहाँ के भौगोलिक परिवेश में निवास करते लोगों के लिए थोड़ा कष्टकर है पर आधुनिक समय में एक भाषा से सम्पूर्ण भारत को जोड़ना अत्यंत जरूरी है।

उच्चारण के समय मुखमंडल के हर अंश से ध्वनित होती अंग्रेजी जैसी शक्तिशाली भाषा के विरुद्ध अगर कोई भाषा डटकर खड़ी हो सकती है, तो वह है हिंदी। इस कारण भारत के पूर्वोत्तर में स्थित असम प्रदेश में कुछ जन नायक हिंदी के प्रचार के लिए निरंतर जुड़े रहे। असम प्रदेश के पटल पर देखें तो लोकप्रिय गोपीनाथ बरदलै वह प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने हिंदी प्रचार को महत्त्व दिया। असम के प्रथम मुख्यमंत्री बनकर उन्होंने हिंदी को उच्च विद्यालयी शिक्षा में निश्चित किया। हिंदी प्रचार हेतु असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की स्थापना उन्होंने की और सालाना दस हजार रुपए संस्था को देने लगे। कालांतर में यह समिति हिंदी प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रही। हिंदी के प्रचार की यह स्रोतस्विनी धारा बहते-बहते माजुली नदी द्वीप पहुँची। जहाँ कई महान व्यक्तियों के अपार परिश्रम से यह भाषा लोकोन्मुखी बनी।

सांस्कृतिक रूप से समृद्ध इस नदी द्वीप में बीसवीं सदी के अंतिम भाग तक कोई हिंदी पठन पाठन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में हिंदी भाषा को गैरजरूरी समझा जाता था। उस काल खंड में असम के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में भी हिंदी पठन- पाठन की सुविधा नहीं थी। जब शहरों में ही हिंदी की यह स्थिति हो तो माजुली द्वीप तो सबसे अलग एक अकेला द्वीप है। अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के साथ सांस्कृतिक रूप से भी पश्चिमी संस्कृति भारतीयता पर हावी होने लगी थी। असमिया लोगों ने भी इस संकट को बखूबी महसूस किया और फिर माजुली जैसे द्वीप में भी शुरू हुआ हिंदी प्रचार आन्दोलन। 1955ई. में राजस्थान से आए लक्ष्मीनारायण व्यास जी ने अपने कुछ अन्य साथियों के साथ माजुली नदी द्वीप में हिंदी शिक्षण प्रारंभ किया। माजुली द्वीप के पौराणिक शिक्षानुस्थानों में से एक 'माजुली आउनी आटी हेमचन्द्र उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' में हिंदी शिक्षक के रूप में व्यास जी ने अपना कर्म जीवन शुरू किया। असमिया लोगों में हिंदी भाषा के प्रति अरुचि को उन्होंने बखूबी समझा था। उन्होंने पता लगाया कि इसका कारण शिक्षा का अभाव ही है। 1971ई. में उन्होंने सर्वेश्वर फुकन, नित्यानंद बरुआ, बुपाराम शइकिया जैसे हिंदी प्रेमियों की मदद से असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के अधीन 'माजुली राष्ट्रभाषा विद्यालय' की स्थापना की और यह विद्यालय माजुली द्वीप में हिंदी भाषा प्रचार का प्रथम प्रयास है। व्यास जी घर-घर जाकर हिंदी की उपयोगिता के बारे में बताकर पठन-पाठन हेतु छात्र खोजने लगे। उन्होंने बताया कि माजुली महाविद्यालय के रिटायर्ड अध्यापक नारायण शर्मा, आनंद हजारिका, कमलाबाड़ी गर्ल्स अकादमी के रिटायर्ड अध्यापिका दलि बरुआ उक्त हिंदी विद्यालय से प्रथम विशारद उपाधि प्रापक बनें। आर्थिक रूप से काफी संपन्न माजुली के साधारण लोगों में हिंदी उतनी

प्रचलित न होने के कारण कालांतर में वह विद्यालय बंद हो गया। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा आयोजित वार्षिक हिंदी परीक्षा असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा आयोजित वार्षिक हिंदी परीक्षा में कई शाखाएँ हैं-परिचय, प्रथमा, प्रवेशिका, प्रबोध, विशारद एवं प्रवीण (दो खंड) इनके विविध स्तर हैं। प्रवीण को स्नातक उपाधि के समकक्ष माना जाता है और उस समय प्रवीण उपाधि प्राप्त लोगों को सरकारी विद्यालयों में हिंदी शिक्षण का मौका भी मिलता था। यही कारण था कि इस परीक्षा की लोकप्रियता असम में बढ़ने लगी। माजुली राष्ट्रभाषा विद्यालय बंद होने के कारण हिंदी प्रचार में फिर वह तत्परता नहीं दिखाई दी। उसी विद्यालय से प्रवेशिका उपाधि प्रापक उत्तर कमलाबाड़ी सत्र के वैष्णव नारायण हजारिका जी के हृदय में हिंदी के लिए अगाध भक्ति भाव जगा था। भारत के कई राज्यों में सत्रीया कला प्रदर्शित करने के दौरान उन्हें यह महसूस हुआ कि हिंदी भाषा सीखना भारतीयों के लिए कितना जरूरी है। कृष्ण जन्म भूमि में इस भाषा की व्याप्ति देखकर खुद को इसे समर्पित करने के लिए उन्होंने ही मन बना लिया था। 1966ई. में जब नारायण हजारिका तीन साल के थे, तभी उनको सोमेस्वर बायन बूढ़ाभगत अपने साथ ब्रह्मचारी बनाकर माजुली के उत्तर कमलाबाड़ी सत्र लेकर आए। सोमेस्वर गायन बूढ़ाभगत से सानिध्य प्राप्त कर अति कम उम्र में ही वरगीत, भटिमा, गीत, नृत्य के साथ-साथ महापुरुषों द्वारा लिखित शास्त्रों में उन्होंने पांडित्य हासिल किया। बाल अवस्था में ही वह सत्र के मुख्य पाठक बनें, और हर रोज अपने अनुपन कंठ से कीर्तन, दसम आदि पोथी पढ़कर सभी वैष्णवों को सुनाने लगे। अपने सुन्दर शरीर और नवनीत कंठ के कारण नाटकों (भाउना) में भी वह आकर्षक नाट्य अभिनेता बने। अपनी जीवनी में उन्होंने यह उल्लेख किया है कि उत्तर कमलाबाड़ी सत्र में ही उन्होंने गोपीराम बर गायन से उजापाली शिक्षा, परमानन्द बर बायन से सत्रीया नृत्य, गीत, नाटक आदि शिक्षा एवं बलोंराम बरगायन से पाठक शिक्षा प्राप्त की। प्राप्त जीवनी से हमें यह पता लगा कि सन् 1976ई. से ही वह भारत के विविध स्थानों पर सत्रीया संस्कृति के प्रदर्शन हेतु जाने लगे। दिल्ली, मद्रास, कोलकाता, हैदराबाद, पंजाब, केरल, भोपाल आदि स्थानों के अलावा असम प्रदेश में विविध जिलों पर भी उन्होंने सत्रीया कला प्रदर्शित की। सन् 1986ई. के गणतंत्र दिवस आयोजन के दिल्ली में भाग लेने वाले असमिया कलाकारों में नारायण हजारिका जी भी एक थे, पूरे दल के सुन्दर प्रदर्शन से उन्हें सर्वश्रेष्ठ दल के रूप में सम्मानित किया। संपूर्ण देश में भ्रमण कर उन्होंने हिंदी भाषा की प्रयोजनीयता का बखूबी अनुभव किया था और माजुली द्वीप में हिंदी प्रचार व्यापक रूप से करने के लिए वह संकल्पबद्ध हुए। माजुली राष्ट्रभाषा विद्यालय से ही प्रवेशिका परीक्षा उत्तीर्ण कर जोरहाट, तेजपुर, लखीमपुर आदि स्थानों से प्रवीण प्रथम खंड तक की पढ़ाई संपूर्ण की और कई हिंदी प्रेमियों की मदद से उन्होंने पुनः 1985ई. में

माजुली राष्ट्रभाषा विद्यालय के स्थान पर इकलौता हिंदी महाविद्यालय 'माजुली राष्ट्रभाषा महाविद्यालय' की स्थापना की। हिंदी के लिए उनके अन्दर जो अनंत प्रेम था उसका निदर्शन हमें तब मिला जब महाविद्यालय स्थापित कर प्रथम वर्ष वह प्रवीण अंतिम खंड के परीक्षा हेतु खुद परीक्षार्थी बने। कालांतर में नारायण हजारिका जी द्वारा हिंदी सेतु निर्माण का यह क्रम कभी रुका नहीं। केवल छात्र-छात्रा ही नहीं विवाहित पुरुष- महिला, बुजुर्ग सभी को हजारिका जी ने हिंदी का विद्यार्थी बनाया। देखते-देखते कुछ ही सालों में महाविद्यालय में 300 से भी ज्यादा परीक्षार्थी परीक्षा देने लगे। नद ब्रह्मपुत्र के कारण इस द्वीप

के लोगों को हर साल प्रलयंकारी बाढ़ का सामना करना पड़ता है। 1998ई. के भयावह बाढ़ से महाविद्यालय का अस्थायी भवन टूट गया। पानी के बहाव तेज के कारण कुछ भी सामग्री नहीं बचाई जा सकी। बाढ़ के बाद सरकार से आर्थिक मदद न मिलने के कारण एक छोटा सा भवन निर्माण किया गया, जहाँ सभी छात्रों के लिए पाठदान असंभव सा लगने लगा था। हिंदी को जीवन का लक्ष्य बनाने वाले नारायण हजारिका जी रुके नहीं। इस प्राकृतिक आपदा ने जैसे उन्हें और व्यापक सोच प्रदान की। उन्होंने माजुली नदी द्वीप के कई स्थानों पर राष्ट्रभाषा विद्यालय खोलकर दूर-दूर के छात्रों के लिए हिंदी शिक्षा को आसान बनाया। वर्तमान समय में उनके द्वारा स्थापित लगभग 15 विद्यालय पूरे माजुली में हैं। उनसे पहले माजुली के कई व्यक्ति असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति से जुड़े हुए थे, जैसे उमेश मुदै, कणपाइ मुदै, धीरेन शइकिया, जयंत बरा आदि। परंतु उन्होंने माजुली द्वीप में हिंदी शिक्षा का जो आन्दोलन शुरू किया वह सबके लिए आदर्श बना। लोग उनके साथ जुड़ने लगे। अखिल ठाकुर, रूमी शइकिया, रितामनी बोरा, बबिता शइकिया आदि कमलाबाड़ी राष्ट्रभाषा महाविद्यालय के तत्कालीन शिक्षक बने। नारायण हजारिका जी ने यह बखूबी अनुभव किया कि इस प्रकार केवल पठन-पाठन से ही हिंदी को व्यापक रूप नहीं प्रदान किया जा सकता। इसी कारण लोगों को हिंदी भाषा के प्रति आकर्षित करने हेतु उन्होंने नाटक लिखकर कई स्थानों पर प्रदर्शन किया। उनके द्वारा लिखित हिंदी नाटक हैं- 'श्रीमंत शंकरदेव' और 'धनुष भंग' जिनको उन्होंने छात्रों की मदद से पूरे द्वीप के विविध स्थानों पर खेला। केवल माजुली में ही नहीं, प्रदेश के विविध स्थानों पर उनके द्वारा रचित नाटक लोगों द्वारा खेला गया। श्री मंत शंकरदेव एक एकांकी नाटक है जहाँ नामघर में शंकरदेव एवं भक्तगण बैठकर विविध विषयों पर चर्चा करता दिखाई देते हैं। दूसरे नाटक धनुष भंग में राम द्वारा सीता स्वयंवर में शिव धनुष भंग की कथा वर्णित है। ब्रजावली भाषा में लिखित उनका नाटक 'राम वन गमन- सीता हरण, बाली वध' आज भी कई सत्रों में खेला जाता है। जहाँ राम की वन यात्रा, रावण द्वारा सीता हरण एवं वानर राज बाली का श्री राम द्वारा वध की कथा ब्रजावली भाषा में वर्णित है। उनके द्वारा लिखित असमिया नाटक- 'मोमाई कटा गड़' और 'ज्ञानी दारा' है। मोमाई कटा गड़ नाटक में आहोम वीर लाचित वरफूकन की कथा और ज्ञानी दारा में एक ज्ञानी चरवाहा के जीवन में घटित एक नैतिक कहानी वर्णित है। उनके द्वारा रचित दो असम्पूर्ण नाटक हैं- 'हमारा माजुली' और 'महापुरुष माधवदेव'। नारायण हजारिका और खितेंद्र नाथ सरकार दोनों असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के व्यवस्थिता सभा में सदस्य हुए। हिंदी प्रचार को जीवन का उद्देश्य बनाने वाले नारायण जी को सन् 2012ई. में 50 वर्ष की आयु में इहलोक से परलोक प्राप्ति हुई। उनके वियोग से माजुली के लोग काफी मर्माहित हुए पर हिंदी प्रचार का जो सपना उन्होंने देखा था वह रुका नहीं। उन्होंने जो सेतु निर्माण किया था वह आज तक मजबूत है। वर्तमान समय में माजुली के कोने-कोने में राष्ट्रभाषा विद्यालय है। कमलाबाड़ी में रूमी शइकिया, अखिल ठाकुर, मुहिकांत बोरा बरबायन, गरमुर में खितेन्द्र नाथ सरकार, टटया गाँव में शिवानी बरुआ, बनगाँव में महेंद्र भुयाँ, जेंगराइ में अश्विनी दले, माजर देउरी में रेहिता देउरी, रतनपुर में माल पेगु, छमयाती में रमेश सेनापति वर्तमान समय में हिंदी प्रचार हेतु कार्यरत हैं। उनके निरंतर प्रयास से माजुली धीरे-धीरे हिंदी भाषा के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है। उत्तर कमलाबाड़ी सत्र पहले से ही वैष्णव संस्कृति के साथ-साथ अन्य सामाजिक कारणों का भी मार्गदर्शक रहा है। वर्तमान सत्राधिकार श्री श्री

जनार्दन देव गोस्वामी जी की वजह से हिंदी प्रचार की यह धारा और विस्तृत रूप से आगे बढ़ी। उन्होंने कई विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा प्रचार सम्बन्धी भाषण रखे। हिंदी भाषा के वृहत प्रचार के लिए उन्होंने राजधानी दिल्ली के कोई लोगों से संवाद किया। परंतु यायावरी तेज़ी हर किसी के अन्दर नहीं होती। लाखों में एक निकलता है जो अपने सुखी जीवन से दूर संकट को अपना पाए। ऐसा ही एक महान व्यक्तित्व हैं दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर चन्दन कुमार जी। प्रभु ईश्वर के आह्वान से बिना कुछ सोचे चौबे जी माजुली नदी द्वीप पहुँचे। यहाँ आकर सब जाति- जनजातियो से संवाद कर इस द्वीप की विविधता को समझने लगे। अब हिंदी प्रचार को मिला था एक बौद्धिक रूप। कई कठिनाईयों के बावजूद चौबे जी रुके नहीं, कई बार मंच पर हिंदी भाषा की उपयोगिता के बारे में समझाते समय उन्हें लोगों से कटु वाक्य भी सुनने पड़े थे। उनका लक्ष्य महापुरुषों द्वारा प्रवर्तित संस्कृति को भारतमुखी बनाना है। उन्होंने यह अनुभव किया कि हिंदी प्रचार के लिए हिंदी भाषी क्षेत्र के लोगों का ध्यान इस भूमि की ओर खींचना जरूरी है। इसीलिए उन्होंने कई विश्वविद्यालयों, सभा समितियों में इस क्षेत्र एवं यहाँ की संस्कृतियों के बारे में बताने लगे। देश के विविध विद्वान लोगों को हर साल अपने साथ माजुली लाकर चन्दन जी इस नदी द्वीप को दे रहे थे एक व्यापक भारतीय परिचय। उनके आश्रय में आज माजुली ज़िले के कई छात्र हिंदी में उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। ब्रजावली भाषा हिंदी से मिलती-जुलती एक भाषा है जिसे श्रीमंत शंकरदेव ने काव्य रचना के लिए तैयार किया था। वैष्णव धर्म को भारतमुखी बनाने के लिए शंकरदेव ने इस कृत्रिम भाषा का प्रयोग किया था। परंतु यह हमारी ही अकर्मण्यता है कि उस विचारधारा को हम भारतमुखी बनाने में आज तक विफल है। सत्राधिकार श्री श्री जनार्दन देव गोस्वामी के नेतृत्व में हर साल रास पूर्णिमा के दिन ब्रजावली भाषा में रास खेला जाता है। जिससे यह भाषा लुप्त होने से बचे और इसे मिले एक सर्वभारतीय परिचय।

विश्व का सर्व वृहत नदी द्वीप माजुली आज भी वैष्णव संस्कृति का ध्वजावाहक है। यहाँ की जाति-जनजातियों में हिंदी प्रचार करना एक चुनौती है जिसे समय-समय पर कई लोगों ने स्वीकारा है। परंतु आज भी यहाँ के गाँवों के लोगों ने हिंदी को उतना नहीं स्वीकारा है। हिंदी सीखने के लिए लोगों में वह उत्साह नहीं होने के कारण माजुली के सरकारी विद्यालयों में हिंदी शिक्षक का प्रायः अभाव देखा जाता है। सभी छात्र अष्टम कक्षा के बाद हिंदी छोड़ देते हैं। कोई इसे निर्वाचित विषय के रूप में ग्रहण करता है, तो उन्हें भी उच्च माध्यमिक स्तर पर जाकर उसे छोड़ना पड़ता है, क्योंकि पूरे जिले में उच्च माध्यमिक स्तर से ही हिंदी विषय नहीं पढ़ाया जाता। असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा आयोजित परीक्षा में प्रवीण उपाधि प्राप्त करने के बाद भी विद्यालयों में हिंदी शिक्षण का मौका नहीं मिलता, इसी कारण इन राष्ट्रभाषा विद्यालयों में भी छात्रों का आना कम हो गया है। व्यावहारिक जीवन को ज्यादा महत्त्व देने वाले इन लोगों में हिंदी की प्रयोजनीयता बोध कम है, एवं हिंदी उच्चारण में असुविधा होने के कारण लोग अंग्रेजी को ज्यादा महत्त्व देने लगे हैं। प्रो. दिनेश कुमार चौबे जी कहते हैं कि "भाषाई समन्वय की दृष्टि से हिंदी को लोकप्रिय बनाने और भारत का सच्चा प्रतिनिधित्व करने के लिए भारतीय सामाजिक संस्कृति की अभिव्यक्ति के माध्यम बनने की योग्यता अर्पित करनी होगी।" उनका अभिप्राय यह है कि हिंदी को नियमों से बाहर निकालकर लोकोन्मुखी बनाना होगा। हिंदी भाषा और साहित्य को संपूर्ण भारत की छवि

को प्रतिबिंबित करना होगा। ऐसा तभी होगा जब लोगों को उसी प्रकार भाषा व्यवहार की छूट देंगे जिस प्रकार उन्हें सुविधा हो। माजुली द्वीप में हिंदी प्रचार के लिए व्यक्तिगत एवं सामूहिक स्तर पर सर्वप्रथम मानसिकता में परिवर्तन की आवश्यकता है, ताकि लोग अपने व्यक्तिगत स्तर एवं संस्थागत स्तर पर हिंदी को अधिक लोकप्रिय बना सकें। भारत की सभी भाषाओं को हिंदी में शामिल कर उसे विस्तृत रूप प्रदान कर जनतामुखी बनाना अत्यंत जरूरी है। सरकार को भी हिंदी भाषा के लिए कार्य करना जरूरी है, ताकि अधिक से अधिक लोग इस भाषा से जुड़े। संस्थाओं को पठन-पाठन के अलावा सांस्कृतिक कार्यों द्वारा हिंदी भाषा को जनगण तक लेकर जाना होगा। माजुली नदी द्वीप पर हिंदी प्रचार आन्दोलन और अधिक व्यापक बने यही लोगों से अपेक्षा है, ताकि एक विदेशी भाषा के ऊपर अपने भाषा का उपयोग लोग गर्व से कर सकें। सन्दर्भ :

1. दक्षिणपात सत्र में प्राप्त हस्तलिखित पौराणिक पोथी,

2. द्विभाषी राष्ट्र सेवक मई 2010ई. पूर्वोत्तर भारत में हिंदी प्रचार की समस्याएँ एवं समाधान डॉ. दिनेश कुमार चौबे, 3. स्वर्गीय नारायण हजारिका द्वारा लिखित अप्रकाशित जीवनी,

4. साक्षात्कार :

लक्ष्मीनारायण व्यास रिटायर्ड हिंदी शिक्षक,

अखिल ठाकुर : हिंदी शिक्षक,

कमलाबाड़ी राष्ट्रभाषा महाविद्यालय,

खितेंद्र नाथ सरकार: हिंदी शिक्षक,

गरमुर श्री लोहित राष्ट्रभाषा विद्यालय,

मुहिकांत बरबायन : हिंदी विशारद,

सत्रीया शिल्पी एवं शिक्षक,

माला हजारिका : स्वर्गीय नारायण हजारिका जी की धर्मपत्नी,

करिना हजारिका : इतिहास अध्येता, माजुली कॉलेज